दलितों व शोषितों का पाक्षिक पत्र

हमायती

सम्पादक–डॉ0 सोहनपाल सुमनाक्षर

□ वर्ष 64 □ अंक-8 □ दिल्ली □ जनवरी (द्वितीय) □ मूल्य : 2 रु.

गुरू रविदास जी की 649वीं जयंती पर विशेष लेख

गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

संत शिरोमणि गुरु रविवास जी का जन्म आज से कोई 649 वर्ष पूर्व पंडित, पांडे, ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में एक चर्मकार के घर माघ पूर्णिमा को रविवार के दिन हुआ था। इस विषय में यह दोहा प्रसिद्ध है–

चौदह सौ तैंतीस की
माघ सुदी पंदरास।
दुनियों के कल्याण हित,
प्रगटे श्री रविदास।।

यह वह समय था जब समाज में छुआछूत, जात–पांत, भेदभाव, ऊंच–नीच, अंधविश्वास चरम सीमा पर था। शूद्र जाति के लोगों को तो जानवरों से भी नीचे मानकर ब्राह्मणवादी लोग उनके साथ दुराचार, अत्याचार, बलात्कार और बर्बरता बरतते हुए उन्हें समता के सभी मानवीय अधिकारों से वंचित किया हुआ था।

भगवत भजन का एकाधिकार ब्राह्मणों का था, और ब्राह्मण को मनु व्यवस्था के अनुसार वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च मानकर सत्ता के शिखर पर बैठे राजा–महाराजा धर्मान्धता के कारण उन्हें पूरा सम्मान देते हुए उनके हर गलत कार्य को भी सही मानते हुए उन्हें पूरा सम्मान देते थे। समाज में अछूतों की तरह महिलाओं को भी बराबर सम्मान प्राप्त नहीं था। उन्हें भी पैरो की जूती मानते हुए उनके साथ खुला दुर्व्यवहार किया जाता था। पति की मृत्यु के साथ उसे भी सती होने के लिए बाध्य किया जाता था।

ऐसे मध्यकालीन भारत में संत शिरोमणि गुरु रविदास ने जन्म लेकर सामाजिक असंतुलन को संतुलित किया, अशांत हृदयों को अपनी वाणी से शांत किया, निराश मनों को आशा की नई किरण दिखाई, अंध विश्वास एवं भ्रमों का प्रमाणित तर्कों से पर्दाफांस किया। धर्म के नाम पर हो रहे अत्याचारों को खत्म करके पूजा का नया सिद्धांत प्रस्तुत किया, ऊंच–नीच की दीवारों को गिराकर सभी को एकता का पाठ पढ़ाया और भाईचारे की भावना को प्रोत्साहित किया।

गुरु रविदास जी ने ब्राह्मणों के गढ़ काशी में वर्ण व्यवस्था का विरोध डंके की चोट करते हुए खुले शब्दों में कहा–

जात–पांत पूछे न कोई,
हरि को भेजे सो हरि का होई।

उन्होंने मन की शुद्धता पर जोर देते हुए कहा–

जिसका मन चंगा,
उसकी खटोटी में गंगा।

गुरु जी ने जात–पांत पर चोट करते हुए कहा–

जात–जात में जात है
ज्यों केलन में पात।
'रविदास' न मानुष जुड़ सकै,
जौ लौं जात न जात।।

उन्होंने मनुष्य के गुणों को महत्ता देते हुए कहा–

रविदास ब्राह्मण ना पूजिये,
जऊ होवे गुनहीन।
पूजिहि चरन चंडाल के,
जऊ होवै गुन परवीन।।

गुरु रविदास जी ने देवी–देवता, मूर्तिपूजा, पूजा–पाठ, धार्मिक आडम्बर का पर्दाफांस करते हुए कहा कि मन ही मंदिर है जहां से सच्ची सुख शांति प्राप्त हो सकती है–

मन ही पूजा, मन ही धूप।
मन ही सेवू सहज सरूप।।

गुरु रविदास जी ने परमात्मा प्राप्ति के लिए बाहरी कर्मकांडों व पूजा पाठों का खंडन करते हुए कहा कि सच्चे मन से प्रभु को समर्पित कर सच्ची पूजा कर सकते हैं–

जब हम होते तब तू नाही,
अब तूही मैं नाही।
जऊ हम बांधे मोह पास,
हम प्रेम बधनि तुम बांधे।।
अपने छुटन को जतनु करहु,
हम छुटे तुम आराधे।।

गुरु रविदास जी ने कट्टरपंथी पंडित–पांडे और मुल्ला मौलवियों पर भी सीधा प्रहार करते हुए कहा–

मंदिर से कोई घिन नहीं,
मस्जिद सो ना प्यार।
दोनों में राम–रहिम नहीं,
कह रविदास चमार।।

गुरु जी ने धर्मांतरण पर सीधी चोट करते हुए कहा–

हरि सा हीरा छांडिके,
करे अन की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।।

गुरु जी का कहना था कि बड़े पुण्य कर्मों के बाद यह दुर्लभ मनुष्य जीवन मिला है। इसे व्यर्थ में विकारों में फंसाकर व्यर्थ गंवाने की जगह प्रभु स्मरण में लगाना चाहिए–

(शेष भाग... पृष्ठ 3 पर)

सम्पादकीय

सत भाखै रविदास

• डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर

दलित साहित्य दलितोत्थान साहित्य है। इसकी पहली शर्त है कि वह दलित, शोषित, वंचित एवं सर्वहारा का उत्थान करने वाला हो। इसकी दूसरी शर्त है कि वह जनभाषा में लिखा हो, जिसे अनपढ़ सर्वसाधारण व्यक्ति भी आसानी से समझ सके। इसकी तीसरी शर्त यह है कि वह यथार्थपूर्ण सत्य पर आधारित हो, कल्पना, मनगढ़ंत, अंधविश्वास से पूर्णतः दूर हो। इसकी चौथी शर्त है कि वह सामाजिक विषमता, अन्याय, असमानता, मानवीय भेदभाव के प्रति संवेदनशील हो और विद्रोही तेवर से परिपूर्ण हो। इसकी पांचवीं शर्त है कि इसमें दासता और सामाजिक अन्याय से छुटकारे के लिए प्रेरणा हो, मार्गदर्शन हो। जो साहित्य इन शर्तों पर खरा उतरता है उसे हम वास्तविक 'दलित साहित्य' कर सकते हैं और उसके रचनाकार को वास्तविक 'दलित साहित्यकार'।

जब हम उपरोक्त मापदंडों पर संत शिरोमणि गुरु रविदास जी की रचनाओं को कसौटी पर कसते हैं तो वे दलित साहित्य की कसौटी पर खरी उतरती हैं। इसके साथ ही गुरु रविदास जी प्रथम दलित साहित्यकार के रूप में हमारे हृदय पटल पर अवतरित होते हैं। उनकी सम्पूर्ण रचनाएं दलितोत्थान रचनायें हैं, जो दोहा, साखी के रूप में लिखी गई हैं। उनकी सभी रचनायें दलित व शोषितों में बोली और समझी जाने वाली जनभाषा हिन्दी में लिखी गई है जिन्हें गांवों में रहने वाला दलित और शोषित आसानी से समझ सकता है।

गुरु रविदास जी का सम्पूर्ण जीवन यथार्थ और सत्यता पर आधारित है। उन्होंने सदैव मन, वचन और कर्म की शुद्धि पर बल दिया और अपने जीवन के दृष्टान्त से भी उसे विश्व के सामने रखा। उन्होंने अपने विषय में कभी कुछ छिपाया नहीं, बल्कि जोर देकर अपने विषय में गर्व एवं स्वाभिमान के साथ सर्वत्र खुलकर कहा।

चौहदवीं सदी में एक जमाना था जब चमार जाति के लोगों को घृणा की दृष्टि से देखा ही नहीं जाता था, बल्कि गाली के रूप में उनका नाम न लेकर 'चमार' कहकर उनका अपमान करते हुए उन्हें पुकारा जाता था। ऐसे समय में गुरु रविदास जी ने मन की शुद्धि के आधार पर अपनी आध्यात्मिक शक्ति को चरम सीमा पर पहुंचा कर वह अमोल शक्ति प्राप्त कर ली थी जिसके आधार पर उन्होंने जब भी जो चाहा, वह उन्हें तुरन्त प्राप्त हो गया। उसी अपार ज्ञान शक्ति के आधार पर गुरु रविदासी जी ने हिन्दुओं के विश्व प्रसिद्ध धार्मिक केन्द्र काशी के ब्राह्मण पंडितों को शास्त्रार्थ और आध्यात्मिक शक्ति प्रदर्शन में हराया और शर्त के मुताबिक उनके कंधों पर अपनी पालकी को ढुलवाया।

इस विषय में गुरु रविदास जी ने अपना एवं अपने परिवार का परिचय बेझिझक देते हुए, और जो लोग 'चमार' जाति के लोगों को 'चमार' कहकर चिढ़ाते थे, उन्हें भी सीधे चेताते हुए कहा :—

मेरी जाति कुट बांढला,
जाके कुटुम्ब

(शेष भाग... पृष्ठ 6 पर)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के प्रकाशन

विश्व धरातल पर दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अंधा समाज और बहरे लोग	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
सिन्धु घाटी बोल उठी	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अब नहीं रहेंगे हाशिये पर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर शतक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
विश्व विभूति डा. अम्बेडकर	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
दलित लेखक परिचय ग्रंथ (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	250/-
बुद्धा दू अम्बेडकर (अंग्रेजी)	डॉ. सुमनाक्षर	150/-
दलित साहित्य	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
अम्बेडकर दर्शन	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
हमारे संत और समाज सुधारक	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
धर्म और समाज	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
आदिम जाति चमार (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	300/-
दलित उद्घोष	डा. सुमनाक्षर	100/-
दलित साहित्य की हुंकार-सात समन्दर पार	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
युगपुरुष बाबू जगजीवनराम	डॉ. सुमनाक्षर	200/-
प्राचीन आदिम जाति वाल्मीकि (इतिहास, धर्म, संस्कृति)	डॉ. सुमनाक्षर	100/-
मेरे साक्षात्कार—मेरा जीवन संघर्ष	डा. सुमनाक्षर	300/-
सभ्यता, संस्कृति, समाज और साहित्य	आचार्य गुरुप्रसाद	100/-
भारत रत्न डा. बी.आर. अम्बेडकर	राजमल 'राज'	100/-
मूल भारती से दलित	राजमल 'राज'	100/-
अम्बेडकरवाद बनाम सामाजिक परिवर्तन	राजमल 'राज'	100/-
दलित साहित्य—दशा और दिशा	डा. माता प्रसाद	200/-
दलित साहित्य से सामाजिक परिवर्तन	डा. माता प्रसाद	100/-
भारत की गुलामी के 22 सौ साल	प्रदीप कुमार मौर्य	250/-
बौद्ध धर्म—गया से अयोध्या तक	प्रदीप कुमार मौर्य	120/-
गांधी, अम्बेडकर और दलित	प्रदीप कुमार मौर्य	100/-
हम एक हैं	डा. माता प्रसाद	100/-
रैदास से संत शिरोमणि गुरु रविदास	डा. माता प्रसाद	100/-
ताकि सनद रहे	डा. सुमनाक्षर	200/-
Who's who Dalit Writers in India	Dr. Sumanakshar	500/-
Who's Who–International & National Awardees of B.D.S.A.	Dr. Sumanakshar	500/-

पुस्तक मंगाने के लिए अग्रिम राशि निम्नलिखित अकादमी के खाते में भेजें

Bharatiya Dalit Sahitya Akademi
A/c No. - 2592101012292 (Canara Bank)
IFSC - CNRB0002592
Branch - Model Town, Delhi

पृष्ठ 1 का शेष....गुरु रविदास जी का बेगमपुरा लोकतांत्रिक राष्ट्र

दुलभ जनमु पुनः फल पाइओ,
बिरथा जात अविवेकै।
राजे इन्द्र समसरि ग्रिह आसन,
बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै।।

गुरु रविदास जी ने अपनी सच्ची अटूट, विलक्षण भक्ति से ब्राह्मणों के गढ़ काशी (वाराणसी) में उन पंडों– पुजारियों को परास्त किया जिन्होंने उनकी आध्यात्मिक भक्ति को ललकारा था। गुरु जी से परास्त होकर उन ब्राह्मणों को शर्त के अनुसार गुरु रविदास जी को डोली में बैठाकर अपने कंधों पर उठाकर सारी काशी नगरी में घुमाना पड़ा।

गुरु रविदास जी की भक्ति भाव से प्रभावित होकर कितने ही राजा– महाराजा और महारानियां उनकी शिष्य/शिष्या बन गये। इनमें चित्तौड़ की महारानी झालीबाई और उसकी पुत्र वधु महारानी मीराबाई प्रमुख हैं। गुरुजी ने इस तरह अपनी आत्मशक्ति और सच्ची भगवान भक्ति के आधार पर झोंपड़ियों की पगडंडियों को राजमहलों से जोड़ा। भगवान बुद्ध के बाद यह दूसरी सामाजिक क्रांति थी जिसने मनुस्मृति, ब्राह्मणवाद, वर्ण व्यवस्था को नकार कर मानव समता का मार्ग प्रशस्त किया। उनकी भक्ति में रमी महारानी मीराबाई तो खुले रूप से गाती फिरती थीं–

मीरा ने गाविंद मिल्या जी,
गुरु मिल्या रैदास।।
रैदास संत मिले मोहिं सत्गुरु,
दीन्ही सुरत सहदानी।
मेरो मन लागो गुरु सों,
अब न रहूंगी अटकी।
गुरु मिलिया रैदास जी
दीन्ही ज्ञान की गुटकी।।

इसलिए आचार्य रजनीश अपनी पुस्तक **तुम्हीं पूजा, तुम्हीं धूप** में कहते हैं कि जो व्यक्ति एक महारानी के मन में बसता हो, वह कोई छोटा–मोटा व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विलक्षण महान व्यक्ति था, रैदास भारत के आकाश के ध्रुवतारा थे।

गुरु रविदास जी अपनी आध्यात्मिक शक्ति व भक्ति की सुगन्धि विश्व में छोड़ते हुए 151 वर्ष की लम्बी आयु में सवंत 1584 में चित्तौड़गढ़ में ब्रह्मलीन हुए, जहां महारानी मीराबाई के निमंत्रण पर वे वहां गये थे। उनकी स्मृति में वहां स्थापित छतरी उनके चरणों की छाप के साथ विराजमान है।

गुरु जी चहुंमुखी विद्या के धनी थे। उन्होंने अपने लोगों के अंदर स्वाभिमान जगाते हुए कहा –

पराधीनता पाप है
जानु लेहू मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन से,
कौन करे है प्रीत।।
पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सभी ही समझे हीन।।

गुरु जी ने कहा कि हमें मधुमक्खिओं की तरह मिलकर रहना चाहिए और अपने साथ हो रहे अन्याय व शोषण का विरोध करते हुए अपने मानवीय एकता के अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने कहा–

सत संगति मिली रहिये माधव,
जैसे मधुम मखीरा।

उन्होंने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि शिक्षा के बिना विवेक रूपी दीया मलीन हो जाता है, इसलिए शिक्षित होना जरूरी है–

माधो अबदिया हितकीन
विवेक दीप मलीन।

गुरु रविदास जी ने सच्चे लोकतांत्रिक राज्य की इन शब्दों में अपनी इच्छा की प्रगट की–

ऐसा चाहुं राज मैं,
जहां मिलै सभन को अन्न।
छोट बडे सब सम बसैं,
रविदास रहें प्रसन्न।।

गुरु जी ने 'स्वराज' को सर्वोत्तम बताते हुए कहा–

रविदास मानुष बसन कूं
सुखकर हैं दुई ठांव।
एक है 'स्वराज्य' में,
दूजा मरघट गांव।।

गुरु रविदास जी ने सच्चे समता–वादी, मानवतावादी और सम्पन्नता व सुख शान्ति से भरपूर बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना अपनी प्रसिद्ध साखी बेगमपुरा शहर में की थी–

बेगमपुरा शहर को नाऊ।
दुखु अंदोहु नहीं तिहि ठाउ।।
ना तसवीस खिराजु न मालु।
खउफु न खता न तरसु जमालु।।

इस बेगमपुरा शहर में न दुःख है, न चिंता, न कोई गम। यहां किसी को कोई डर–भय नहीं, क्योंकि यहां कोई किसी के आधीन नही। यहां सदैव सुख और कल्याण है। यहां न तो किसी प्रकार का माल खरीदना पड़ता और न ही कोई टैक्स देना पड़ता है, यहां न कोई घाटा हो जाने का डर है। यह सुन्दर शहर एक बादशाहत के आधीन सदैव आबाद रहता है और जलवायु के लिहाज से सर्वोत्तम है, यहां कहीं भी आने–जाने की कोई रूकावट नहीं है जो जहां चाहे सैर करता फिरता है। सब लोग यहां रोटी, कपड़ा, मकान की समस्या से दूर भाईचारा व बराबरी के लिहाज से समान स्तर पर आनन्द के साथ रहते हैं।

गुरु रविदास जी के बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना को बाबा साहब डा. अम्बेडकर ने भारतीय संविधान में समाजवादी, समतावादी–समता, स्वतंत्रता, भाईचारा पर आधारित सबको शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, न्याय, धर्म व आस्था में स्वतंत्र अभिव्यक्ति के अधिकार देकर पूरा किया है।

भारतीय संविधान गुरु रविदास जी के सपनों का दस्तावेज है जो देश के प्रत्येक नागरिक को समानता के अधिकार प्रदान करता है। गुरु जी की इस बेगमपुरा साखी के साथ उनके 40 पद महान पवित्र ग्रंथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दिये गये हैं जो उनकी महानता और महत्ता को दर्शाती है।

ऐसे महान बेगमपुरा राष्ट्र की कल्पना करने वाले, सर्वप्रथम 'स्वराज्य' की प्रेरणा देने वाले और अपनी आध्यात्मिक भक्ति की शक्ति से मन में ही सच्चे परमात्मा का मन्दिर स्थापित करने वाले गुरुओं के भी गुरु श्री रविदास महाराज की जयन्ती पर हार्दिक बधाई।

हमें गर्व से कहना चाहिए कि हम रविदासी हैं, और उस गुरू के शिष्य, पुत्र और अनुयायी हैं जिसने ६५० साल पहले निडर होकर सच्चे देशभक्त के रूप में वर्ण व्यवस्था, जात–पांत का विरोध करते हुए मानवता के लिए एकता, स्वतंत्रता और भाईचारे का सन्देश दिया।

जय गुरूदेव। •

आधुनिक रविदासिया धर्म : आस्था का लहराता सागर

• डा. लालती देवी
प्रदेशाध्यक्ष, भारतीय दलित साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश

सम्पूर्ण विश्व भर में आज तक अनेक धर्म अस्तित्व में आए हैं। वह विकसित हुए और कुछ समाप्ति के कगार पर भी चले गये। इनमें से कुछ धर्म धावकों जैसी विजय पाने की प्रवृत्ति, बदला लेने की भावना, हृदय में बसती दूसरे मनुष्यों के प्रति ईर्ष्या और पृथ्वी पर अपनी सत्ता स्थापित करने के लालच के कारण अस्तित्व में आए और लुप्त हो गये। इस देश में बाहर से आए आक्रमणकारी शक, हूण और आर्य लोगों ने इस देश के मूल निवासियों, के धर्म और संस्कृति को जड़ से ही समाप्त कर दिया था और उसके अवशेषों पर अपने धर्म की स्थापना की है। विश्व भर के उस विकसित हुए प्राचीन धर्म के बचे हुए अवशेष और चिन्ह विश्वसनीय स्थानों की खुदाई से प्राप्त हुए हैं। विजेता आर्य लोगों ने आदिवासियों–वनवासियों के बहादुर शूरवीरों को तथाकथित राक्षस, दैत्य, असुर, दुष्ट बताकर बिना किसी डर के मौत के घाट उतार दिया था। इस प्रकार मूल निवासियों की प्रारम्भिक भाषा एवं विकसित हो चुकी संस्कृति को आर्य लोगों ने पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया। यह ऐतिहासिक बिडम्बना है कि मोहनजोदड़ों की खुदाई से आदि–भाषा के नमूने प्राप्त हुये हैं, परन्तु उस भाषा को पढ़ने वाला कोई भी मनुष्य जिंदा नहीं बचा है, जो इस देश में हजारों वर्ष पूर्व प्रचलित थी।

इस संदर्भ में मध्य युग अथवा संत कालीन सामाजिक व्यवस्था के पहले एक मानवतावादी धर्म–'बुद्ध धर्म' का प्रादुर्भाव हुआ। तत्पश्चात संत रैदास, कबीर, नानक, दादू, पीपा, सहजोबाई जैसे आध्यात्मिक संतों ने पुनः समाप्त होती मानवता के निमित्त एक अमर ज्योति जलाई है, जो पूरे विश्व में मानव समुदाय को प्रकाशित कर रही है। इसी परिपेक्ष्य में हम संत रविदास जी के जीवन दर्शन तथा उनके द्वारा किये गये जन कल्याणकारी कार्यों को जब सूक्ष्मता के साथ अनुशीलन करते हैं तो साफ दिखाई पड़ता है कि बुद्ध, रैदास, कबीर, नानक का मानवतावादी धर्म आज भी आम जनमानस की आस्था का केन्द्र बिन्दु बना हुआ है। संत रैदास जी के सिद्धान्तों पर आधारित वर्तमान में रैदासी (रविदासी) समुदाय द्वारा एक नवीन आधुनिक धर्म की स्थापना की गयी है, जिसके विषय में विस्तार से उल्लेख करना जरूरी है।

भारत में 30 जनवरी, 2010 ई. को सतगुरू रविदास जी महाराज के 633वें प्रकाशोत्सव पर हिन्दू धर्म की राजधानी बनारस (काशी) में सीरगोवर्धनपुर के पावन पवित्र धाम पर, विश्व के सब से अद्भुत व आधुनिक 'रविदासिया धर्म' की स्थापना की गई। मानववादी इस आलौकिक धर्म की स्थापना का शुभ कार्य, भारत में बसे विश्व प्रसिद्ध डेरा सच्चखण्ड बल्लां जिला जालंधर (पंजाब) के गद्दीनशीन परम–पूज्य संत श्री 108 संत निरंजन दास जी और देश भर के संत–समाज की उपस्थिति में, विश्व भर के विभिन्न देशों से पधारे, लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थित में सम्पन्न हुआ है। परम पूज्य श्री 108 संत सुरिन्दर दास बाबा जी ने इस नवीन धर्म के नियमों का ऐलान किया था। सीरगोर्वधनपुर में उपस्थित लाखों श्रद्धालुओं ने नए धर्म का ऐलान होते ही अपने हाथ खड़े कर 'रविदासिया धर्म' को कबूल कर लिया। इस धर्म की सबसे बड़ी बात यह हुई कि विश्व के कोने–कोने में बसे श्रद्धालुगणों ने जब इलेक्ट्रानिक उपकरणों के माध्यमों द्वारा इस स्थापित किए गए 'रविदासिया धर्म' के बारे में देखा और सुना तो उन्होंने तुरन्त अपने–अपने घरों में और सतगुरू रविदास महाराज जी व डेरा सच्चखण्ड बल्लां के संत–महापुरुषों की पावन मूर्तियों के समक्ष खड़े होकर, हाथ जोड़कर इस अनुपम धर्म को अंगीकार किया। यह दुनियां की एक अद्भुत और विचित्र घटना बन गयी थी। ऐसा प्रतीत होता था जैसे सत्गुरू रविदास महाराज जी के एक ही जैकारे से यह धर्म पूरे विश्व में फैल गया हो। इसे आधुनिक युग का यह सबसे बड़ा चमत्कार कहा जा सकता है।

प्राचीन काल से ही धर्म की विशेषता रही है और यह गुण उस धर्म की आत्मा मानी जाती है, जिसमें में उस धर्म का पूर्ण सिद्धान्त शामिल होता है। रविदासिया धर्म का वर्ण–रहित, श्रेणी रहित और मानवीय समानता पर आधारित दर्शन सिद्धांत उत्कृष्ट और नवीन धर्म सिद्धान्त हैं। विश्व इतिहास में फ्रांस की क्रांति (1789–1795) एक अद्भूत घटना थी। इस क्रांति ने दासता से मुक्ति अर्थात् आजादी, मानवीय अधिकार व समानता का नया नारा विश्व की झोली में डाला था। जबकि गुरू रविदास महाराज जी की पावन वाणी का अध्ययन करते हुए हम देखते हैं कि यह सुनहरा सिद्धांत तो सतगुरू रविदास महाराज जी ने फ्रांस की क्रांति से लगभग 350–400 वर्ष पूर्व संसार को प्रदान कर दिया था। इसी प्रकार 'अनोखा समाजवाद' का सिद्धान्त भी कार्ल मार्क्स के जन्म से 441 वर्ष पूर्व, प्रकट हुए गुरू रविदास महाराज जी ने अपनी पावन वाणी द्वारा विश्व के समक्ष रख दिया था, क्योंकि गुरू रविदास की वाणी यूरोपीय भाषाओं में अनुवादित होकर, देश की सीमाओं के पार पहुंच चुकी थी। इसी कारण फ्रांस क्रांति के नेता महान रूसो

और वाल्तेयर विश्व को यह नहीं बता पाये कि उन्होंने यह अनोखा सिद्धान्त गुरू रविदास महाराज जी के सिद्धान्त से लिया है।

रविदासिया धर्म का मुख्य उद्देश्य सतगुरू रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना है। इनके साथ–साथ महाऋषि वाल्मीकि जी, सतगुरू नामदेव जी, सतगुरू कबीर जी, सतगुरू त्रिलोचन जी, सतगुरू सैन जी, सतगुरू सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना भी शामिल है।

गुरू रविदास जी के अनूठे सिद्धान्त के अनुसार, विश्व में से मानवीय श्रेणीक्रम और वर्ण–प्रणाली को जड़ से उखाड़ कर संसार में श्रेणी रहित और जाति–पांति रहित समाज की स्थापना करना मुख्य उद्देश्य है। ऐसा शहर जहां सभी समान हों। इस धर्म द्वारा उत्पीड़ित वर्णों को हीन भावना त्याग कर स्वयं में आत्म विश्वास से भरने के लिए प्रेरणा और बल प्रदान किया गया है। रविदासिया धर्म के धार्मिक ग्रंथ 'अमृतवाणी' सतगुरू रविदास माहाराज जी के पृष्ठ 2 पर अंकित है–

''बेगमपुरा शहर को नाउ।
दूखु अंदोह नाहीं तिहि ठाँऊं
दोम न सोम एक सो आही।
जो हम सहरी सु मीतु हमारा।''

यह सिद्धान्तवादी पद श्री गुरू रविदास जी महाराज ने 'गाऊरी राग' में उच्चारित किया है। अमृतवाणी के पृष्ठ संख्या–170 पर गुरू जी के प्रकट किये सिद्धान्त को दर्शाता श्लोक इस प्रकार है–

'ऐसा चाहू राज
मैं जहां मिले सबन को अन्न,
छोट–बड़े सब सम बसै
रविदास रहे प्रसन्न।'

फ्रांस की क्रांति से सदियों पूर्व गुरू जी ने–स्वतंत्रता का संदेश संसार को दे दिया था।

''पराधीनता पाप है
जान लेहु रे मीत
रविदास दास पराधीन से
कौन करे है प्रीत।''

विश्व भाईचारे के विषय में गुरू जी ने तो अन्तिम बात ही कह दी है। यदि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की उपज हैं, सब का वही पिता है तो फिर मनुष्यों में भेदभाव किस बात का रह जाता है। काल्पनिक ऊंच–नीच किस लिए रह जाती हैं।

''रविदास एक ही नूर ते
ज्यों उपजेंऊ संसार–
ऊंच नींच किह विध भये
ब्राह्मण अरू चमार।''

गुरू जी तो सभी प्राणियों को एक मिट्टी से बना बताकर अपने कथन को और स्पष्ट करते हैं –

'ऐको माटी के सब भांडे
ऐको सृजनहारा।'

(अमृतवाणी–पृष्ठ संख्या 155)

रविदासिया धर्म के गुरू सतगुरू रविदास जी ने धर्म के एक और अद्भूत व महत्वपूर्ण पक्ष अपने हाथों से मेहनत करने के विषय में अपने अनुयायियों को आदेश दिया है– **'जिह्वा सो ओंकार जप हथन सों कर कार'** (अमृतवाणी–पृष्ठ संख्या 161)

यह संदेश गुरू जी के जीवन निर्वाह का अटूट अंग है। गुरू जी सम्पूर्ण जीवन अपने हाथों से मेहनत कर निर्वाह करते रहे हैं। उनका यह कर्म संसार के सभी संत–गुरूओं से न्यारा है, जिसे विश्व प्रणाम करता है। कर्म करने के साथ–साथ गुरू जी ने अज्ञानता के घोर अंधकार को त्याग कर ज्ञान प्राप्त करने का अनुपम संदेश दिया है।

''माधो अविधा अहित कीन–
विवेक दीप मलीन''

(अमृतवाणी–पृष्ठ संख्या 11)

इस प्रकार यह बात स्पष्ट हो जाती है कि रविदासिया धर्म के अनूठे सिद्धान्त के साथ–साथ ज्ञान, भक्ति व कर्म का सुन्दर सामंजस्य भी है जो एक सजीव धर्म का बड़ा गुण समझा जाता है। संसार का यह उत्कृष्ट धर्म, इतनी उत्तम विशेषताओं के होते हुए गुरू रविदास जी के जीवनकाल के दौरान विश्व में क्यों विकसित नहीं हो सका। सम्पूर्ण रैदासी समाज आभारी है सतगुरू स्वामी निरंजन दास महाराज जी का जिनकी असीम कृपा दृष्टि से संसार का अद्भुत, नवीन, आधुनिक और मानव कल्याणकारी यह अनुपम धर्म सन् 2010 ई. के प्रारम्भ में ही श्रद्धालुओं ने आत्मसात् कर लिया। आवश्यकता इस बात की है कि हम दृढ़ निश्चय और कठोर इरादे के साथ तन–मन–धन से इस महान धर्म को दूर–दूर तक बसे लोगों तक पहुंचायें, जिन्हें अपने अन्दर के आत्म–विश्वास की शक्ति प्रज्ज्वलित करने के लिए इस धर्म की अति आवश्यकता है। •

हिमायती
हिन्दी पाक्षिक पत्र
पढ़ें और आगे बढ़ें।

कुछ नया गुल खिलाओ

• पारसनाथ

अब
तुम पीठ पीछे की
गतिविधियों को जानो
पहचानो
अपना दिशा–निर्देश
अपने भीतर से लो
दलित मुक्ति के लिए
जागृत हो क्योंकि,
अब
सिर पर मेला ढोने से
काम नहीं चलेगा
मरे जानवरों को उठाना त्यागो
फुटपाथ पर बैठ
जूता मत गांठों
सूअर मत पालो
मत चराओ
अब सब कुछ ब्राह्मणवादियों को
सौंप दो
बलात गुलाम बनाने वाली
उनकी नियति ठकुराओ
ओ! मेरे दलित भाई!
अब कुछ नया गुल खिलाओ!! •

सम्पादकीय का शेष....सत भाखै रविदास

ढोर ढोवत नितही बनारसी
आस पासा।
अब विप्र परधान
तिनहि करिहि डंडवति,
तेरे नाम सरनाई रविदास दासा।।

गुरु रविदास जी दलित साहित्य के आदि कवि हैं। वे सामाजिक क्रान्ति के अग्रदूत हैं। उन्होंने निर्भीकता से ब्राह्मणवाद के गढ़ में रहकर वेद–शास्त्र और पुराणों का खंडन किया और खुले रूप से कहा भी :–

चारों वेद कियो खण्डोति।
जन रैदास करे दण्डौति।।

गुरु रविदास जी ने अपने को कभी भी अछूत चमार जाति में पैदा होने के कारण छोटा या नीच नहीं समझा उन्होंने सदैव अपने 'सद्कर्मों' के बल पर छुआछूत और अमानवीय व्यवहार करने वालों को ललकारते हुए कहा–

जाति भी ओछी, करम भी ओछा,
ओछा कसब हमारा,
नीच से प्रभु ऊंच कियो है,
कह रविदास खलास चमारा।

गुरु रविदास जी ने सदैव 'कर्म' पर बल दिया और लोगों को 'श्रम' करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा–

श्रम को ईश्वर जान के,
जऊ पूजहि दिन रैन।
रविदास तिन्हहि संसार मह,
सदा मिलहि सुख चैन।
रविदास हौं निज हत्थहि,
राखौ राम्पी आर।
सुकिरित ही समधरम है,
तारैगा भव पार।।
रैदास श्रम करि खाइहि,
जौं लौं पार बसाय।
नेक कमाई जऊ करइ,
कबहुं न निह फल जाय।।

उन्होंने कर्मकांड, यानी अवतारवाद, देवी–देवतावाद, जाति, वर्ण व्यवस्था, अंधविश्वास, रूढ़िवाद, पुरोहितवाद, मूर्तिपूजा और असमानता का खुलकर खण्डन किया। उन्होंने आजीवन दलित समाज का एक सूत्र में बांधने के लिए आह्वान किया–

जात जात में जात है,
ज्यों केलन में पात।
रविदास न मानुष जुड़ सके,
जब लौं जात न जात।।

गुरु रविदास जी ने अपने लोगों में स्वाभिमान जाग्रत किया। सवर्णों की धर्मान्धता को ललकारते हुए उन्होंने स्पष्ट किया–

रविदास हमारो राम जी,
दसरथ करि सुत नाहि।
राम हमउ मांहि रमि रह्यो,
बिसब कुटंबह मांहि।।
रैदास तू कांवचि फली,
तुझहु न छिवे कोई।
तैं निज नांव न जाणिया,
भला कहां ते होई।।

उन्होंने ब्राह्मणवादियों से प्रश्न किया, जिसका उत्तर वे आज तक नहीं दे सके–

रविदास एक ही नूर ते
जिमी उपज्यों संसार।
ऊंच नीच किह विध भये,
बामन और चमार।।
जब सब करि दोऊ हाथ पग,
दोऊ नैन, दोऊ कान।
रविदास पृथक कैसे भये,
हिन्दू और मुस्लमान।।
वेद पढ़ई पंडित बन्यो,
गांठ पनही तऊ चमार।
रैदास मनुष्य इक हइ,
नाम धरै हइ चार।।

गुरु रविदास जी भगवान बुद्ध की परम्परा के महापुरुष थे। भगवान बुद्ध ने मन, वचन और कर्म की शुद्धि का जो मार्ग प्रशस्त किया, गुरु रविदास जी ने उसे अपने जीवन में पूर्ण रूप से अपनाया।

इसलिए उनका कहना था कि जिसका मन शुद्ध है, उसे गंगा तथा अन्य तीर्थ जाने की जरूरत नहीं। इस विषय में उनकी जगत प्रसिद्ध यह उक्ति दृष्टव्य है–

जिसका मन चंगा।
उसकी खटोटी में गंगा।।

इस दृष्टान्त को गुरु रविदास जी ने सत्य कर दिखाने के लिए अपनी चमड़े भिगोने की कुंडी से साक्षात् गंगा को प्रकट कराकर घंमडी ब्राह्मण पंडितों को आश्चर्यचकित कर दिया था।

इसलिए वे हमेशा कहते थे–

रविदास बामन मत पूजिये,
जो होवे गुणहीन।
पूजिये चरन चांडाल के,
जो होवे गुनप्रवीन।।

गुरु रविदास जी ने 'मानवता' को सर्वोपरि माना। इसलिए उन्होंने सदैव कर्मकांडी ब्राह्मणों और धर्मान्ध मुल्लाओं का अपनी रचनाओं में कटाक्ष किया–

जो तू बामन बामनी जाया।
तो और बाट काहे न आया?

इसी तरह,

जो तू तुरक तुरकनी जाया।
तो पेट में खतना,
क्यों न करवाया?

उन्होंने सदैव सच्चाई का पर्दाफांस किया–

मस्जिद से कछु घिन नहीं,
मन्दिर सो न कछु प्यार।
दोऊं मंह अल्लाह राम नहीं,
कह रविदास खलास चमार।।

गुरु रविदास जी दलित, शोषित, उपेक्षित और सर्वहारा समाज के सदैव प्रेरक और मार्ग दर्शक रहे हैं। उन्होंने सदैव अपने अनुयायियों को मानवीय अधिकारों के प्रति सचेत किया। पराधीन की पीड़ा एवं दुर्दशा का वर्णन करते हुए उन्होंने इससे छुटकारे का आह्वान किया और उनको प्रगति की ओर प्रेरित किया। दलितों के लिए उनका सन्देश था–

पराधीन का दीन क्या,
पराधीन बेदीन।
रविदास दास पराधीन को,
सबही समझे हीन।
पराधीनता पाप है,
ज्ञान लेहुं मेरे मीत।
रविदास दास पराधीन
से कोई न करे प्रीत।।

गुरु रविदास जी ने अपने सपनों के भारत देश की इन शब्दों में कल्पना की थी :–

ऐसा चाहूं राज मैं,
जहां मिले सभी को अन्न।
छोट बड़े सब सम बसें,
रविदास रहे प्रसन्न।।

उन्होंने आज से साढ़े छह सौ साल पूर्व 'स्वराज्य' की कामना इन शब्दों में की थी–

'रैदास' मनुष्य करि बसन कूं,
सुखकर है दुई ठांव,
इक सुख है 'स्वराज' महि,
दूसर है मरघट गांव।।

वे प्रत्येक मनुष्य में 'विधाता' की छवि देखते थे। इसीलिए वे उसकी कृति 'मनुष्य' को भी 'हरि' का रूप ही आंकते थे। इसीलिए उस 'मनुष्य' को तरजीह देते हुए वे कहते थे –

'हरि' सा हीरा छाडिके,
करे अन्य की आस।
ते नर दोजख जायेंगे,
सत भाखै रविदास।। ●

हिमायती
7 / जनवरी (द्वितीय) 2026 (कुल पृष्ठ 8)
प्रकाशन तिथि : 31 जनवरी, 2026
आर. एन. आई. नं. 40611/62

लोकतंत्र के प्रथम प्रहरी : सन्त शिरोमणि श्री गुरू रविदास

– डॉ. सुरेन्द्र सेलवाल, राष्ट्रीय सचिव, भारतीय दलित साहित्य अकादमी

संत श्री गुरू रविदास जी का जन्म एक चर्मकार परिवार में माघ सुदी 15 विक्रमी संवत 1433 में काशी के निकट ग्राम माण्डूर में हुआ था। उसे मडुआडीह भी कहा गया है। उनके पिता का नाम रघु व माता का नाम करमा देवी था। गुरू रविदास जी का समस्त जीवन दुर्बल, कमजोर वर्गों व अवर्गों के कल्याण को समर्पित था। वहीं मानव कल्याण हेतू उनकी वाणी तथ्यात्मक व तार्किकता से परिपूर्ण मानवाधिकारों की आज भी अलख जगाती है।

शिरोमणि संत श्री गुरू रविदास ने कहा कि–

''चारिउ वेद किया खंडौति,
जन रैदास करें दंडौति।

इस देश में **महामानव गौतम बुद्ध** और **महावीर स्वामी** के अलावा वेदों को ऐसी चुनौती देने वाला ऐसा कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है।

संत शिरोमणि गुरू रविदास का आराध्य निश्चल, निराकार, अनुपम, निर्भीक, अगम, अगोचर, निर्गुण और अति आनन्द स्वरूप है। वह निर्विकार भी है। उनका आराध्य निरजंन अर्थात अंजन कालिमा–कलुष रहित है। साधना करके उसे प्राप्त करने के बाद पुनः इस भवसागर में आवागमन नहीं होता है।

कहै रैदास निरंजन ध्याओ।
जो हि घर जाओ बहुरि नहिं आओ।।

यह गति निर्वाण की प्राप्ति की गति है, जो बिना विमल ज्ञान के प्राप्त नहीं हो सकती। विमल ज्ञान का अर्थ शुद्ध, स्वच्छ, पवित्र या दोषरहित ज्ञान है जो अज्ञानता, अहंकार से मुक्त है।

'उन्होंने अपने समय में ज्ञान की ऐसी अमर ज्योति जलाई जिससे अंधकार तो दूर हुआ ही, लोकचेतना और मानवीय एकता का प्रचार भी हुआ। उनका जन्म भले ही तथाकथित निम्न कुल में हुआ हो पर उनकी वाणी द्वारा देश और समाज का जो कल्याण हुआ। उन्होंने अंधकार युगीन समय में जन्म लेकर समाज का पथ–प्रदर्शन किया। देश की एकता की लड़ी को मजबूत तो बनाया ही, राष्ट्रीयता और मानवता को भी बल प्रदान किया। उन्होंने ज्ञान का जो दीपक जलाया, उसका प्रकाश आज भी हमें सुख, शांति और आनंद प्रदान कर रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा।

संत गुरू श्री रविदास जी की वाणियां प्राचीन होते हुए भी जीवित और जागृत है। उनकी विशालता का श्रेय, मानवीय उदारता विश्व कल्याण की भावना, वृहत दृष्टिकोण तथा एक न्यायपूर्ण समाज के लिए उनके भावनात्मक समर्थन के प्रति कार्य को जाता है जिसे उनके विरोधी चाहकर भी नकारना चाहें तो भी उनके प्रकाश को रोक नहीं सकते हैं।

संत गुरू श्री रविदास जी के जीवन–दर्शन से ही महात्मा ज्योतिबा फूले तथा डॉ. भीमराव अम्बेडकर भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। अनेक नेताओं और समाज सुधारकों पर भी उनका प्रभाव देखा जा सकता है।

विवेकपूर्ण यक्ष प्रश्न यह है कि क्या लगभग 649 साल पहले जो संत शिरोमणि गुरू रविदास ने कहा थाः–

ऐसा चाहूं राज मैं,
जहाँ मिले सभी को अन्न।
छोट–बड़े सब सम बसै,
रविदास रहे प्रसन्न।।

उस लोकतान्त्रिक राज्य की पूरी रूप रेखा अपनी प्रसिद्ध साखी 'बेगमपुरा' में संत गुरू श्री रविदास जी ने यों वर्णित किया है।

बेगमपुरा शहर को नाऊं।
एकम दोयम ना तोहीं पाऊं।।

देश को आजादी मिलने के बाद महामानव डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा रचित भारतीय संविधान के 26 जनवरी 1950 को लागू होने के बाद भारत के लोगों को आशा जगी थी कि संत गुरू रविदास जी का सपना पूरा होगा और भारत में विशेषतः हिन्दुओं में जात–पात, ऊँच–नीच, भेदभाव खत्म होगा और सभी लोग सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और राजनीतिक स्तर पर बराबर होंगे। लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या का हल हो जायेगा और लोग सुख की सांस लेते हुए आनन्द की जिन्दगी बितायेंगे। परन्तु भारतीय संविधान देश में लागू होने के बावजूद स्वतंत्रता, समता, बन्धुता, न्याय व सुरक्षा के अधिकार अभी तक प्राप्त नहीं हुए हैं, उल्टे ''पूना पैक्ट'' करारनामा के बतौर मिले आरक्षण कोटे के अधिकार को षडयंत्रपूर्वक खत्म किया जा रहा है।

यह संत रविदास जी का विमल ज्ञान गौरव ही था कि भारतीय इतिहास के मध्ययुग की तत्कालीन भीषण और विषम वर्ण व्यवस्था तथा जाति प्रथा से ग्रसित समाज के तथाकथित दलित परिवार में जन्म लेकर भी उन्होंने रानी झाली, महारानी मीरा बाई और राजकुमार भोज को दीक्षा देकर अपना शिष्य बनाया।

''श्री गुरू ग्रंथ साहिब'' सिक्ख धर्मानुयायियों का पूज्य ग्रंथ है। उसमें संत श्री गुरू रविदास जी के 40 पद सम्मिलित किये गये हैं। इससे उनके ज्ञान की महता सिद्ध होती है। यही नहीं, सिक्ख धर्म समुदाय की धार्मिक भाषा गुरूमुखी का आविष्कर्ता भी गुरू संत रविदास को ही माना जाता है। निःसंदेह ये सभी तथ्य उनकी ज्ञान साधना, निर्मल मन, बहुजन हित और बहुजन सुख के लिए सार्थक भावना तथा दार्शनिक चिन्तन की उच्चता एवं श्रेष्ठता दर्शाते हैं। वस्तुतः संत रैदास 'संतों में महान संत ही नहीं, उनमें भी शिरोमणि भी थे।''

संत श्री रविदास जी ने जनमानस को आध्यात्मिकता का संदेश दिया था–

''मन चंगा, तो कठौती में गंगा।''

यानि जिस मनुष्य का मन पवित्र है, तो उसकी कठौती में ही गंगा है। उसे किसी बाह्य आडम्बरों से मन का मैल साफ करने की जरूरत नहीं, और निर्मल मन से ही वह सुख की प्राप्ति कर सकता है।

संत श्री गुरू रविदास जी ने प्रख्यात जर्मन विचारक कार्ल मार्क्स से बहुत पहले समाजवाद की कल्पना अपनी रचनाओं में की थी। वे समतामूलक समाज की परिकल्पना करने वाले वे पहले विचारक थे। उन्होंने ही सर्वप्रथम एक ऐसे नगर की कल्पना की थी जिसमें निवास करने वाले व्यक्तियों में जाति–पाति व ऊँच–नीच का भेद नहीं होगा तथा कोई भूखा नहीं होगा, सभी मानव सुखी होंगे।'' संत गुरू श्री रविदास जी ने बेगमपुरा शहर की कल्पना इस तरह की है–

बेगमपुरा सहर को नाउ दुखु अंदोह नहीं तिहि ठाउ।
नां तसबीस खिराजु न माल खउफु व तरलु जवालु।।
अब मोहि खूब बंतन गइ पाई, ऊहां खैदि सहा मेरे भाई।
काइमु दाइमु सदा पति साही दोम न क्षेम एक सौ आही।।
आबादानु सदा मसहूर उहां गनीद बसाद्धि मामूद।।2।।
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै, मरहम महल न को अटकावै।
कहि रविदास खलास चमारा, जो हम सहरी सो मीतु हमारा।।3।।

श्री गुरू रविदास जी ने कहा, ''उस स्थान का नाम बेगमपुरा है, जिसमें मैं बसता हूं। उस स्थान पर न कोई दुःख है, ना चिन्ता और न कोई घबराहट, ना उस स्थान पर कोई धनवान है, ना ही कोई धनमाल पर चुंगी लगती है। उस अवस्था में किसी पाप कर्म का भय नहीं है। कोई खतरा नहीं है, कोई गिरावट नहीं है। हे मेरे भाई, मैंने बसने के लिए वह स्थान पा लिया है जहां सुख ही सुख है। वह बादशाहत टिकने वाली है, वहां किसी का दूसरा व तीसरा स्थान नहीं है। सब एक जैसे है। वह शहर सदा प्रसिद्ध है और आबाद है। वहां पर धनी व तृप्त व्यक्ति रहते हैं। उस शहर में वे ही आचरण करते हैं जो उस महल के जानकार होते हैं। अतः उनके लिए कोई रूकावट नहीं डाल सकता है। संत रविदास चमार कहते हैं कि जो भी हमारे साथ इस शहर में रहने वाला है वह हमारा मित्र है तथा हमें प्यारा है।''

संत श्री गुरू रविदास जी ने श्रम की महता इस प्रकार बताई हैः–

श्रम को ईसर जानि के जड़ पूजै दिन रैन।
रविदास तिन्हहि संसार में सदा मिलहि सुख चैन।।

यानि जो श्रम को ईश्वर मानकर रात दिन पूजा करते हैं, अर्थात श्रम करते हैं, उन्हें ही संसार में सुख–चैन प्राप्त होता है।

संत रविदास स्त्री शिक्षा व समानता के बड़े पक्षधर थे। हिन्दू शास्त्रों में स्त्री को दीक्षा लेने व गुरू को ग्रहण करने की सख्त मनाही थी। स्त्री का गुरू केवल उसका पति ही होता है, ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। वैसे भी, ढ़ोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी को ताड़न का अधिकारी बताया गया, परन्तु श्री गुरू रविदास जी ने मेवाड़ की राजकुमारी मीरा बाई को दीक्षा दी, तथा अपना शिष्य बनाया। इसी प्रकार चितौड़ की रानी झाली को भी दीक्षा दी थी। गुरू रविदास उसके आमत्रण पर चितौड़ भी गये थे तथा वहां उनका ब्राह्मणों से वाद–विवाद भी हुआ था।

संत रविदास के मतानुसार– ''ईश्वर के समक्ष स्त्री–पुरूष, ऊँचा–नीचा, सब समान है, तथा सभी ईश्वर का ध्यान करके मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। यह किसी वर्ग विशेष की बापौती नहीं है। वहीं, गुरू रविदास का समकालीन संतों के साथ व्यापक संपर्क रहा है, तथा उनके विचारों का प्रभाव संत कबीर, गुरू नानक, धन्ना जाट इत्यादि पर रहा है।''

''महामानव डॉ. भीमराव अम्बेडकर पर भी संत रविदास के विचारों का काफी प्रभाव रहा, तथा उन्होंने अपनी पुस्तक Who were Shudras को गुरू रविदास को समर्पित किया है। बौद्ध धर्म व संत रविदास के विचारों में समानता है। दोनों ही में वर्ण व्यवस्था ऊँच–नीच व जातिवाद का खंडन किया गया है तथा व्यक्ति के कर्म व आचरण को ही श्रेष्ठ माना गया है। प्रत्येक अम्बेडकरवादी डॉ. अम्बेडकर के जन्म से पहले मूलतः रैदासी ही है।'' इसमें भेद अनुचित है।

आज आवश्यकता है कि संत रविदास जी के संदेशों की अलख पर अमल करते हुए, संगठित होकर उन शक्तियों का मुकाबला करें, जो हमारे मार्ग में बाधाएं खड़ी कर रही हैं। संत रविदास की अलख से उपजे गैर बराबरी के विरूद्ध आन्दोलन से लेकर लोकतान्त्रिक व्यवस्था की परिकल्पना तक डॉ. भीमराव अम्बेडकर जैसे महान नेताओं ने संघर्ष करके जो सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व शिक्षा एवं सरकारी प्रशासनिक सेवाओं के क्षेत्र में आरक्षण संबंधी अजिकार दिलाये थे, उनकी रक्षा के लिए आगे आयें।

आज हमारा कर्तव्य है कि समाज के हर व्यक्ति को उसका न्यायपूर्ण अधिकार, शिक्षा, स्वास्थय व रोजगार के क्षेत्र में प्राप्त हों। हमें किसी एक राजनैतिक दल के वोट बैंक या लेवल से स्वतंत्र होकर कार्य करना है, जिससे हम अपने हितों की स्वयं रक्षा कर सकें और भारतीय संविधान की सुरक्षा कर पायें। इसी से हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों का कल्याण होगा।

यही गुरू रविदास जी का अमर सन्देश है जिसे हमें हर दलित के घर–घर तक पहुंचाना है तभी हम गुरू रविदास जी के ऋण से हम विमुक्त हो सकेंगे।•

स्वामी, सम्पादक/ प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर द्वारा वन्दना आफसेट प्रिन्टर्स, A-9 सराय पीपलथला एक्सटेंशन, दिल्ली-33 में मुद्रित तथा रजि. कार्यालय : 233 टैगोर पार्क, माडल टाउन, दिल्ली-9 से प्रकाशित। □ सह सम्पादक एवं व्यवस्थापक - जय सुमनाक्षर, मो. 9810278936 **Email-sumanakshar@ymail.com**

नोट : हिमायती में प्रकाशित रचनाओं के लिए सम्पादक की सहमति जरूरी नहीं। हिमायती से सम्बन्धित किसी भी कानूनी कार्रवाई का क्षेत्र दिल्ली न्यायालय तक ही सीमित है।

सम्पादकीय कार्यालय : बी 3/9, दूसरी मंजिल, माडल टाउन-1, दिल्ली-110009